पाठ 5

गण की धातुओं का लट् लकार; अकारांत पुंलिंग और नपु. लिंग तथा आकारांत स्त्री. संज्ञाओं की द्वितीया विभक्ति; सर्वनाम भवत् की प्रथमा और षष्ठी विभक्ति, एक वार्तालाप.

5.1 क्रि. भू. गण की धातुएँ: क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं जिससे क्रिया के विभिन्न रूप बनते हैं। रूप-रचना की दृष्टि से संस्कृत धातुओं को दस गणों में बाँटा गया है। प्रत्येक गण का नाम उस गण की प्रमुख धातु के नाम पर रखा गया है। प्रथम गण की प्रमुख धातु **भू** (होना) है, इसके नाम पर इस गण का नाम **भ्वादि (भू+आदि)** गण रखा गया है। हम इसे संक्षेप में **भू**-गण कहेंगे। इस गण की कुछ प्रमुख धातुएँ नीचे दी गई हैं:

पठ्	पढ़ना	**क्रीड्**	खेलना
वस्	रहना	**रुह्**	चढ़ना, उगना
खाद्	खाना	**नी**	ले जाना, नेतृत्व करना
पत्	गिरना	**स्मृ**	याद करना
निन्द्	निन्दा करना	**भू**	होना

टिप्पणी: हम व्याकरण में क्रियाओं के वर्तमानकाल, भूतकाल, भविष्यत् काल आदि से परिचित हैं। कालों के अलावा क्रियाएँ वक्ता की इच्छा, प्रार्थना, आदेश आदि मनोभावों को भी बताती हैं जिसे व्याकरण में **वृत्ति** कहते हैं। संस्कृत में 6 काल और 4 वृत्तियाँ हैं। संस्कृत व्याकरण के प्रसिद्ध आचार्य पाणिनि ने सभी कालों और वृत्तियों को बहुत संक्षिप्त और व्यवस्थित नाम दिए हैं। इन सभी नामों का पहला अक्षर **ल्** है इसलिए इन्हें **लकार** कहते हैं। वर्तमान काल को **लट् लकार** कहते हैं।

5.2 क्रि. वर्तमान काल (लट्), अन्त्य प्रत्यय और अंग—मूल धातुओं में कुछ अन्त्य प्रत्ययों को जोड़कर क्रियारूप बनाए जाते हैं। लट् लकार के कर्तृवाच्य के रूप धातुओं के साथ निम्नलिखित अन्त्य प्रत्ययों को जोड़ने से बनते हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**-ति**	**-त:**	**-(अ) न्ति**
मध्यम पुरुष	**-सि**	**-थ:**	**-थ**
उत्ताम पुरुष	**-मि**	**-व:**	**-म:**

क्रियाओं के रूप बनाने के लिए धातुओं के साथ अन्त्य प्रत्यय जोड़े जाते हैं। परन्तु प्रत्यय जोड़ने से पूर्व कुछ धातुओं में, उनके गण के अनुसार, कुछ परिवर्तन हो जाता है। धातुओं के इस परिवर्तित रूप को, जिसके साथ अन्त्य प्रत्यय जुड़ते हैं, **अंग** कहते हैं।

भू-गण की धातुओं के अंग बनाने के लिए धातु के साथ **अ** जोड़ा जाता है। इस प्रकार **पठ्** और **वस्** क्रमशः **पठ** और **वस** हो जाते हैं। भू-गण की अधिकांश धातुओं के अंग बनाने के लिए इतना ही पर्याप्त होता है। अब अंग के साथ उपर्युक्त अन्त्य प्रत्यय जोड़कर वर्तमान काल के रूप बनाए जा सकते हैं। यहाँ दो नियमों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है–

क. भूगण की धातुओं के अंग के साथ **-अन्ति** के बजाय **-न्ति** प्रत्यय जोड़कर अन्य पुरुष का बहुवचन रूप बनाया जाता है।

ख. उत्तम पुरुष के प्रत्ययों (**-मि, -व:** और **-म:**) से पूर्व अंग बनाने के लिए जोड़ा गया **अ आ** में बदल जाता है।

अब हम **पठ्** (पढ़ना) धातु के लट् लकार के रूप बना सकते हैं। ये रूप नीचे दिए गए हैं। इनसे पूर्व कोष्ठक में कर्ता के रूप में सर्वनाम भी दिए गए हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	(सः) **पठति**	(तौ) **पठत:**	(ते) **पठन्ति**
मध्यम पुरुष	(त्वं) **पठसि**	(युवां) **पठथ:**	(यूयं) **पठथ**
उत्ताम पुरुष	(अहं) **पठामि**	(आवां) **पठाव:**	(वयं) **पठाम:**

इन धातुरूपों को कर्ता के साथ बोलकर कई बार दुहराइए ताकि आप इनसे भली-भाँति परिचित हो जाएँ।

टिप्पणी: संस्कृत में केवल एक ही वर्तमान काल है। इसीसे सामान्य वर्तमान और सातत्यबोधक वर्तमान का बोध होता है, इसलिए **स: पठति** का अर्थ वह पढ़ता है और वह पढ़ रहा है, दोनों हो सकते हैं।

5.3 सं. द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)**.** अब तक हमने तीन प्रकार की संज्ञाएँ पढ़ी हैं- अकारान्त पुंलिंग, आकारान्त स्त्रीलिंग और अकारान्त नपुंसकलिंग। द्वितीया विभक्ति में इन तीनों प्रकार की संज्ञाओं के रूप नीचे दिए गए हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पुंलिंग	**बालकम्**	**बालकौ**	**बालकान्**
स्त्रीलिंग	**बालिकाम्**	**बालिके**	**बालिका:**
नपु. लिंग	**वनम्**	**वने**	**वनानि**

टिप्पणी: नपुंसकलिंग की सभी संज्ञाओं के रूप प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों में एक समान होते हैं।

5.4 सा. द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक) का प्रयोग मुख्य रूप से **क)** क्रिया के मुख्य कर्म के रूप में और **ख)** गतिसूचक क्रियाओं के गंतव्य स्थान को बताने के लिए

होता है। **ग)** इसके अतिरिक्त **विना, परितः अमितः** (चारों ओर), **सर्वतः** (सभी ओर), **उभयतः** (दोनों ओर) और **प्रति** (की ओर) आदि अव्ययों के साथ भी द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

5.5 अ. निम्नलिखित वाक्यों को बोलकर पढ़िए और हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

1. सः पुस्तकं पठति। 2. ते पुस्तकानि पठन्ति। 3. अहमपि मम पुस्तकं पठामि। 4. किं त्वमपि अधुना पुस्तकं पठसि? 5. न, अहं पुस्तकं न पठामि, पत्रं पठामि। 6. अपि यूयं प्रातः मन्त्रान् पठथ? 7. आम्, वयं प्रातः मन्त्रान् पठामः। 8. युवां किं पठथः? 9. आवां पुस्तकानि पठाव। 10.तौ किं पठतः? 11. तौ अपि पुस्तकानि पठतः। 12. वयं पुस्तकं विना न पठामः। 13. अस्माकं ग्रामं परितः वनम् अस्ति। 14 विद्यालयम् उभयतः विशाला वाटिका अस्ति।

5.6 क्रि. वस्, खाद्, पत्, निन्द्, और **क्रीड्** धातुओं के लट् लकार के रूप **पठ्** धातु की तरह आसानी से बनाए जा सकते हैं। इनके लट् लकार के रूप नीचे दिए गए हैंः

वसति	**वसतः**	**वसन्ति**	**वससि**	**वसथः**	**वसथ**	**वसामि**	**वसावः**	**वसामः**
खादति	**खादतः**	**खादन्ति**	**खादसि**	**खादथः**	**खादथ**	**खादामि**	**खादावः**	**खादामः**
पतति	**पततः**	**पतन्ति**	**पतसि**	**पतथः**	**पतथ**	**पतामि**	**पतावः**	**पतामः**
निन्दति	**निन्दतः**	**निन्दन्ति**	**निन्दसि**	**निन्दथः**	**निन्दथ**	**निन्दामि**	**निन्दावः**	**निन्दामः**
क्रीडति	**क्रीडतः**	**क्रीडन्ति**	**क्रीडसि**	**क्रीडथः**	**क्रीडथ**	**क्रीडामि**	**क्रीडावः**	**क्रीडामः**

आपने ध्यान दिया होगा कि प्रत्येक कालम के क्रियारूपों के अन्त एक समान हैं। अब आप इन सभी क्रियारूपों को नीचे दिए उदाहरणों की तरह उनके सर्वनाम कर्ता के साथ दुहराइएः

सः वसति, तौ वसतः, ते वसन्ति ; त्वं वससि, युवां वसथः, यूयं वसथ; अहं वसामि, आवां वसावः, वयं वसामः, आदि।

टिप्पणीः इन रूपों को प्रयासपूर्वक याद करने की आवश्यकता नहीं है। आप केवल इन्हें बार-बार दुहराइए और विभिन्न रूपों के बीच आपसी सम्बन्धों को समझने की कोशिश कीजिए। केवल क्रियारूपों का अलग से अभ्यास मत कीजिए। इन्हें हमेशा किसी कर्ता के साथ दुहराइए। इस प्रकार आप केवल व्याकरणिक रूपों को सीखने के बजाय स्वाभाविक संस्कृत की वाक्य रचना सीखेंगे।

5.7 क्रि. भू-गण की अधिकांश व्यंजनान्त धातुओं के रूप **पठ्** के समान बनाए जा सकते हैं, परन्तु कुछ स्वरान्त धातुएँ या जिन धातुओं के मध्य में (दो व्यंजनों के बीच में) **इ, उ,** या **ऋ** स्वर होते हैं उनके अंग बनाते समय धातु में कुछ परिवर्तन हो जाता है, निम्नलिखित धातुओं के अंग देखिएः

रुह्	(उगना)	→	**रोह**
नी	(ले जाना)	→	**नय**
स्मृ	(स्मरण करना)	→	**स्मर**
भू	(होना)	→	**भव**

इन धातुओं के लट् लकार के रूप निम्नलिखित है:

रोहति	**रोहत:**	**रोहन्ति**	**रोहसि**	**रोहथ:**	**रोहथ**	**रोहामि**	**रोहाव:**	**रोहाम:**
नयति	**नयत:**	**नयन्ति**	**नयसि**	**नयथ:**	**नयथ**	**नयामि**	**नयाव:**	**नयाम:**
स्मरति	**स्मरत:**	**स्मरन्ति**	**स्मरसि**	**स्मरथ:**	**स्मरथ**	**स्मरामि**	**स्मराव:**	**स्मराम:**
भवति	**भवत:**	**भवन्ति**	**भवसि**	**भवथ:**	**भवथ**	**भवामि**	**भवाव:**	**भवाम:**

5.8 अ. नीचे सर्वनाम कर्ताओं के साथ कोष्ठक में कुछ धातुएँ दी गई हैं। कर्ता के अनुसार इनके सही रूप लिखिए-

स: **(वस्),** अहम् **(खाद्)**, ते **(क्रीड्)**, आवाम् **(स्मृ)**, त्वम् **(निन्द्)**, तौ **(नी)**, यूयम् **(पठ्)**, युवाम् **(वस्)**, अहम् **(क्रीड्)**, ते **(पत्)**, वयम् **(नी)**।

5.9 क्रि. पा (पीना), **गम्** (जाना), **दा** (देना), **दृश्** (देखना) और **स्था** (ठहरना, बैठना) जैसी कुछ ऐसी धातुएँ हैं जिनके कुछ लकारों में क्रियारूप बनाते समय उनमें काफ़ी परिवर्तन हो जाता है। इन पाँच धातुओं के रूप बदलकर क्रमश: **पिब्, गच्छ्, यच्छ्, पश्य्** और **तिष्ठ्** हो जाते हैं। लट् लकार में इनके रूप निम्नलिखित हैं:

पिबति	**पिबत:**	**पिबन्ति**	**पिबसि**	**पिबथ:**	**पिबथ**	**पिबामि**	**पिबाव:**	**पिबाम:**
गच्छति	**गच्छत:**	**गच्छन्ति**	**गच्छसि**	**गच्छथ:**	**गच्छथ**	**गच्छामि**	**गच्छाव:**	**गच्छाम:**
यच्छति	**यच्छत:**	**यच्छन्ति**	**यच्छसि**	**यच्छथ:**	**यच्छथ**	**यच्छामि**	**यच्छाव:**	**यच्छाम:**
पश्यति	**पश्यत:**	**पश्यन्ति**	**पश्यसि**	**पश्यथ:**	**पश्यथ**	**पश्यामि**	**पश्याव:**	**पश्याम:**
तिष्ठति	**तिष्ठत:**	**तिष्ठन्ति**	**तिष्ठसि**	**तिष्ठथ:**	**तिष्ठथ**	**तिष्ठामि**	**तिष्ठाव:**	**तिष्ठाम:**

5.10 अ. नीचे लिखे वाक्यों को बोलकर पढ़िए और हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

1. तत् तेषां गृहम्। 2. ते तत्र वसन्ति। 3. रमेश: कमलां निन्दति। 4. रमेश: कमलां न निन्दाति। 5. वयम् ईश्वरं स्माराम:। 6. आवां शीतलं जलं पिबाव:। 7. ते अधुना विद्यालयं गच्छन्ति। 8. ता: बालिका: पाठं स्मरन्ति। 9. सा पुस्तकस्य चित्राणि पश्यति। 10. बालका: चपला: भवन्ति। 11. तत् विशालं वनम्। 12. तत्र वृक्षा: रोहन्ति। 13. मनुष्या: मधुराणि फलानि खादन्ति। 14. वयम् अत्र क्रीडाम:। 15. अपि त्वं बालकं गृहं नयसि? 16. स: पुस्तकानि यच्छति। 17. अहं मम चित्रं यच्छामि। 18. युवां कुत्र गच्छथ:? 19. आवाम् अधुना नगरं गच्छाव:। 20. ते अत्र एव तिष्ठन्ति।

5.11 सर्व. सर्वनाम भवत्. युष्मद् सर्वनाम के **त्वम्** आदि एकवचन रूपों का प्रयोग, हिन्दी के **तू** की तरह, वक्ता के द्वारा किसी घनिष्ठ व्यक्ति के साथ बातचीत के लिए किया जाता है। छोटे बच्चे, घनिष्ठ मित्र या पति-पत्नी एक दूसरे को संबोधित करने के लिए **त्वम्** का प्रयोग कर सकते हैं। ईश्वर को भी **त्वम्** से संबोधित किया जाता है **(त्वमेव माता च पिता त्वमेव)**। वक्ता द्वारा किसी व्यक्ति के प्रति अनादर या अवज्ञा का भाव प्रकट करने के लिए भी **त्वम्** का प्रयोग होता हैं। किन्तु जिस स्थिति में हम संस्कृत का अध्ययन कर रहे हैं वहाँ हमें **त्वम्** का प्रयोग करने की आवश्यकता लगभग नहीं ही होगी। जब हम अपने समान स्तर के या अपने से बड़े व्यक्तियों से बात करते हैं तो हम आदरपूर्ण भाषा का व्यवहार करते हैं और तब संस्कृत में **त्वम्** के बजाय **भवत्** सर्वनाम का प्रयोग होता हैं। ऐसी स्थिति में पुरुष के लिए **भवान्** (पुलिंग एकवचन) और स्त्री के लिए **भवती** (स्त्री. एकवचन) का प्रयोग होता है। इस अर्थ में **भवत्** मध्यम पुरुष का सर्वनाम है, परन्तु इसके साथ हमेशा क्रिया के प्रथम पुरुष का प्रयोग होता है। सर्वनाम **भवत्** व्यजनांत है इसलिए इसके नियमित रूपों को हम बाद में सीखेंगे। परन्तु हम यहाँ इसके **(प्रथमा विभक्ति)** कर्ताकारक और **(षष्ठी विभक्ति)** संबंधकारक के रूप दे रहे हैं ताकि हम संस्कृत में स्वाभाविक वार्तालाप का अभ्यास कर सकें।

भवत् (पुंलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	**भवान्**	**भवन्तौ**	**भवन्तः**
षष्ठी	**भवतः**	**भवतोः**	**भवताम्**

भवत् (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	**भवती**	**भवत्यौ**	**भवत्यः**
षष्ठी	**भवत्याः**	**भवत्योः**	**भवतीनाम्**

5.12 प. आइए, अब भवत् सर्वनाम के प्रयोग पर आधारित एक वार्तालाप पढें:

1. **मोहनः**— नमस्ते!
2. **कमला**— नमस्ते!
3. **मोहनः** — भवत्याः नाम किम् अस्ति?
4. **कमला** — मम नाम कमला अस्ति। भवतः नाम किम् अस्ति?
5. **मोहनः** — मम नाम मोहनः अस्ति। अपि एषा बालिका भवत्याः भगिनी अस्ति?

6. **कमला** – आम्, एषा मम भगिनी। आवां संस्कृतस्य पाठं पठावः। किं भवान् अपि संस्कृतं पठति?
7. **मोहनः** – आम्, अहमपि संस्कृतं पठामि।
8. **कमला** – अहम् अधुना गीतायाः श्लोकान् पठामि। भवान् अधुना कुत्र गच्छति?
9. **मोहनः** – अहम् अधुना गृहं गच्छामि। भवती कुत्र गच्छति?
10. **कमला** – अहम् अधुना विद्यालयं गच्छामि। नमस्ते।
11. **मोहनः** – नमस्ते।

अभ्यासों के उत्तर

5.5 1. वह पुस्तक पढ़ रहा है। 2. वे पुस्तकें पढ़ रहे हैं। 3. मैं भी अपनी पुस्तक पढ़ रहा हूँ। 4. क्या तुम भी इस समय पुस्तक पढ़ रहे हो? 5. नहीं, मैं पुस्तक नहीं पढ़ रहा हूँ, पत्र पढ़ रहा हूँ। 6. क्या आप (सब) सुबह मंत्र पढ़ते हैं? 7. हाँ, हम सुबह मंत्र पढ़ते हैं। 8. तुम (दोनों) क्या पढ़ रहे हो? 9. हम (दोनों) पुस्तक पढ़ रहे हैं। 10. वे (दोनों) क्या पढ़ रहे हैं? 11. वे (दोनों) भी पुस्तक पढ़ रहे हैं। 12. हम पुस्तक के बिना नहीं पढ़ते। 13. हमारे गा;व के चारों ओर वन है। 14. विद्यालय के दोनों ओर विशाल बगीचा है।

5.8 सः वसति, अहं खादामि, ते क्रीडन्ति, आवां स्मरावः, त्वं निन्दसि, तौ नयतः, यूयं पठथ, युवां वसथः, अहं क्रीडामि, ते पतन्ति, वयं नयामः।

5.10 1. वह उनका घर है। 2. वे वहाँ रहते हैं। 3. रमेश कमला की निन्दा करता है। 4. कमला रमेश की निन्दा नहीं करती। 5. हम ईश्वर को याद करते हैं। 6. हम (दोनों) ठंडा पानी पी रहे हैं। 7. वे अब विद्यालय जा रहे हैं। 8. वे लड़कियाँ पाठ याद कर रही हैं। 9. वह पुस्तक के चित्र देख रही है। 10. लड़के चंचल होते हैं। 11. वह बड़ा जगंल है। 12. वहाँ पेड़ उगते हैं। 13. वे लड़किया; मीठे फल खा रही हैं। 14. हम यहाँ खेल रहे हैं। 15. क्या तुम उस लड़के को घर ले जा रहे हो? 16. वह पुस्तकें दे रहा है। 17. मैं अपना चित्र दे रहा हूँ। 18. तुम (दोनों) कहाँ जा रहे हो? 19. हम (दोनों) अब शहर जा रहे हैं। 20. वे यहीं ठहर रहे हैं।

5.12 1) नमस्ते। 2) नमस्ते। 3) आपका क्या नाम है? 4) मेरा नाम कमला है। आपका नाम क्या है? 5) मेरा नाम मोहन है। क्या यह लड़की आपकी बहिन है? 6) हाँ, यह मेरी बहिन है। हम दोनों संस्कृत के पाठ पढ़ते हैं। क्या आप भी संस्कृत पढ़ते हैं? 7) हाँ, मैं भी संस्कृत पढ़ता हूँ। 8) मैं अब गीता के श्लोक पढ़ रही हूँ। आप अब कहाँ जा रहे हैं? 9) मैं अब घर जा रहा हूँ। आप कहाँ जा रही है? 10) मैं अब विद्यालय जा रही हूँ। नमस्ते। 11) नमस्ते।